

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 09-11-2024

विषय सूची

भारत की डिजिटल क्रांति: गवर्नेंस (Governance) को ई-गवर्नेंस (E-Governance) में बदलना

सीरिया में सत्ता परिवर्तन

आनुवंशिक रूप से संशोधित मलेरिया परजीवियों का उपयोग करके मलेरिया की रोकथाम

भारत में FDI प्रवाह 1 ट्रिलियन डॉलर के पार

रेलवे (संशोधन) विधेयक 2024

डी-डॉलरीकरण (De-dollarization) और डॉलर पर निर्भरता के विरुद्ध हेजिंग

भारत का भूस्थानिक बाजार 2025 तक 25,000 करोड़ रुपये तक पहुंच जाएगा

भारत ने सहकारी क्षेत्र में विश्व की सबसे बड़ी अनाज भंडारण योजना का विस्तार किया

संक्षिप्त समाचार

अंगामी नागा जनजाति

विश्व ध्यान दिवस

नारकोटिक ड्रग्स आयोग (CND)

तेल क्षेत्र संशोधन विधेयक, 2024

RBI का MuleHunter-AI टूल

भारत की डिजिटल क्रांति: गवर्नेंस (Governance) को ई-गवर्नेंस(E-Governance) में बदलना

सन्दर्भ

- हाल के वर्षों में भारत के डिजिटल बुनियादी ढांचे में परिवर्तनकारी विकास हुआ है, जिससे देश डिजिटल अपनाने में वैश्विक अग्रणी के रूप में स्थापित हो गया है।

परिचय

- क्लाउड कंप्यूटिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), मशीन लर्निंग (ML) और डिजिटल गवर्नेंस में नवाचारों द्वारा संचालित तेजी से विस्तारित डिजिटल अर्थव्यवस्था के साथ, भारत का बुनियादी ढांचा सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए लगातार विकसित हो रहा है।
- देश की डिजिटल आधार को मजबूत करने, सरकारी सेवाओं को प्रदान करने में पहुंच, मापनीयता एवं सुरक्षा सुनिश्चित करने, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रमुख पहल और परियोजनाएं शुरू की गई हैं।
- डिजिटल पब्लिक इनफ्रास्ट्रक्चर (DPI) उन मूलभूत डिजिटल प्रणालियों को संदर्भित करता है जो सुलभ, सुरक्षित एवं अंतर-संचालन योग्य हैं, जो आवश्यक सार्वजनिक सेवाओं का समर्थन करते हैं।

भारत का डिजिटल अवसंरचना परिवर्तन

- भारत में, औद्योगिक विकास के लिए पारंपरिक बुनियादी ढांचे की तरह ही, DPI डिजिटल अर्थव्यवस्था को परिवर्तन करने में सहायक रहा है।
 - आधार:** विश्व का सबसे बड़ा डिजिटल पहचान कार्यक्रम।
 - 138.34 करोड़ से अधिक आधार संख्याएँ जारी की गई, जिससे पहचान प्रमाणीकरण सुनिश्चित हुआ।
 - यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफ़ेस (UPI):** जून 2024 तक 24,100 करोड़ वित्तीय लेन-देन की सुविधा प्रदान की गई।
 - वित्तीय समावेशन और कैशलेस लेन-देन को बढ़ाता है।
 - डिजिलॉकर:** 37 करोड़ से अधिक उपयोगकर्ता, डिजिटल दस्तावेज़ सत्यापन और भंडारण प्रदान करते हैं।
 - DIKSHA:** विश्व का सबसे बड़ा शिक्षा मंच, 556 करोड़ शिक्षण सत्र प्रदान करता है।
 - राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क (NKN):** राष्ट्रीय और राज्य डेटा केंद्रों को जोड़ता है, जिससे संसाधन साझाकरण एवं सहयोगी अनुसंधान संभव होता है।
- अतिरिक्त प्लेटफॉर्म**
 - GeM:** सरकारी खरीद को सुलभ बनाता है।
 - UMANG:** 7.12 करोड़ से अधिक उपयोगकर्ताओं के साथ 32 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में 2,077 सरकारी सेवाएँ प्रदान करता है।
 - Co-WIN और आरोग्य सेतु:** टीकाकरण ट्रैकिंग और कॉन्टैक्ट ट्रैसिंग के ज़रिए स्वास्थ्य सेवाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन।
 - ई-संजीवनी(e-Sanjeevani) और ई-हॉस्पिटल(e-Hospital):** टेलीमेडिसिन और अस्पताल प्रबंधन के ज़रिए स्वास्थ्य सेवा वितरण में बदलाव।
 - पोषण ट्रैकर और ई-ऑफिस:** पोषण निगरानी को बेहतर बनाएँ और सरकारी वर्कफ्लो को डिजिटल बनाएँ।

- **मेरी पहचान(MeriPehchaan):** सरकारी सेवाओं तक निर्बाध पहुँच के लिए सिंगल साइन-ऑन प्लेटफ़ॉर्म।
- **API सेतु:** 6,000+ API के ज़रिए डेटा एक्सचेंज की सुविधा देता है, जिससे 312 करोड़ लेन-देन संभव होते हैं।
- **मेघराज (GI क्लाउड):** केंद्र और राज्य सरकारों में क्लाउड इकोसिस्टम को प्रोत्साहन देता है, जिससे:
 - डिजिटल भुगतान।
 - पहचान सत्यापन।
 - सहमति-आधारित डेटा साझाकरण।

अर्थव्यवस्था और समाज पर प्रभाव

- **आर्थिक विकास:** वित्तीय समावेशन (UPI, आधार के माध्यम से) को बढ़ावा देता है, AI लागत को कम करता है, और डेटा केंद्रों और क्लाउड सेवाओं के साथ नवाचार को बढ़ावा देता है। बुनियादी ढांचे पर व्यय से GDP गुणक 2.5-3.5 गुना बढ़ जाता है।
- **वैश्विक नेतृत्व:** इंडिया स्टैक जैसे भारत के डिजिटल समाधान वैश्विक दक्षिण की सहायता कर रहे हैं।
- **कुशल शासन:** डिजिलॉकर, उमंग और मेघराज जैसे प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से सेवाओं की तेज़, पारदर्शी और काग़ज़ रहित डिलीवरी।
- **सामाजिक प्रभाव:** शिक्षा (दीक्षा), स्वास्थ्य सेवा (Co-WIN, e-Sanjeevani) और कौशल विकास (SIDH) में सुधार करता है।
- **समावेशिता:** कॉमन सर्विस सेंटर (CSCs) ई-सेवाओं तक ग्रामीण पहुँच को बढ़ाते हैं।

चुनौतियां

- **डिजिटल डिवाइड:** ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित कनेक्टिविटी और सामर्थ्य।
- **साइबर सुरक्षा जोखिम:** बड़े पैमाने पर डेटा संग्रह के कारण डेटा उल्लंघन और गोपनीयता संबंधी चिंताएँ।
- **बुनियादी ढांचे की कमी:** बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए अपर्याप्त बैंडविड्थ और डेटा सेंटर क्षमता।
- **कौशल की कमी:** AI और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसी उन्नत तकनीकों में डिजिटल साक्षरता एवं विशेषज्ञता की कमी।
- **नीति और समन्वय के मुद्दे:** धीमा अंतर-विभागीय समन्वय और पुराना नियामक ढाँचा।

आगे की राह

- **बुनियादी ढांचे का विस्तार करें:** ग्रामीण कनेक्टिविटी में निवेश करें और डेटा सेंटर की क्षमता बढ़ाएँ।
- **साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करें:** डेटा सुरक्षा कानूनों को मजबूत करें और मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों को लागू करें।
- **डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दें:** कौशल अंतर को समाप्त करने के लिए लक्षित कार्यक्रम शुरू करें, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में।
- **नीति को कारगर बनाएँ:** तकनीकी प्रगति के साथ सामंजस्य बनाए रखने के लिए नियामक ढांचे को सरल बनाएँ।

Source: PIB

सीरिया में सत्ता परिवर्तन

सन्दर्भ

- सीरियाई विद्रोहियों ने राजधानी दमिश्क पर कब्ज़ा कर लिया, जिससे सीरिया के राष्ट्रपति के रूप में बशर अल-असद का शासन समाप्त हो गया।

सीरियाई युद्ध की समयरेखा

- 2011: विद्रोह और गृह युद्ध की शुरुआत**
 - अरब स्प्रिंग के बाद सीरिया में लोकतंत्र समर्थक विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए, सरकार ने हिंसक दमन के साथ प्रत्युत्तर दिया।
 - सीरियाई विपक्ष ने असद के शासन से लड़ने के लिए फ्री सीरियन आर्मी (FSA) का गठन किया।
 - संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ ने असद को पद छोड़ने के लिए कहा।
- 2012: हिसा में वृद्धि:** संघर्ष एक पूर्ण गृह युद्ध में बदल गया, जिसमें कई सशस्त्र समूह सरकार और एक-दूसरे से लड़ रहे थे। असद शासन को रूस और ईरान से समर्थन मिला।
- 2013: चरमपंथी समूहों का उदयः** इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एंड सीरिया (ISIS) ने क्षेत्र पर नियंत्रण करना शुरू कर दिया, जिससे क्षेत्र में चरमपंथियों की बढ़ती उपस्थिति की आशंका उत्पन्न हो गई।
- 2014: ISIS के खिलाफ अमेरिका के नेतृत्व वाला गठबंधन**
 - इस्लामिक स्टेट ने सीरिया और इराक के कुछ हिस्सों में खिलाफत की घोषणा की, जिससे ISIS से लड़ने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय गठबंधन (अमेरिका के नेतृत्व में) का गठन हुआ।
 - कुर्द बल, मुख्य रूप से YPG (पीपुल्स डिफेंस यूनिट्स), ISIS के विरुद्ध युद्ध में प्रमुखता प्राप्त करते हैं, विशेषकर उत्तरी सीरिया में।
- 2015: रूसी हस्तक्षेप**
 - रूस ने असद सरकार के समर्थन में सैन्य हस्तक्षेप किया, विपक्षी समूहों के खिलाफ हवाई हमले शुरू किए।
 - ईरान ने अपनी भागीदारी बढ़ाई, असद को सैन्य और वित्तीय सहायता प्रदान की।
- 2016: अलेप्पो के लिए युद्ध**
 - युद्ध की सबसे बड़ी लडाईयों में से एक अलेप्पो में हुई, जिसमें रूसी और सीरियाई बलों द्वारा भारी बमबारी की गई। वर्ष के अंत तक शहर असद के शासन में चला गया।
- 2017: अमेरिकी सैन्य भागीदारी और रासायनिक हमले**
 - खान शेखुन शहर पर एक रासायनिक हमले के कारण सीरियाई एयरबेस पर अमेरिकी मिसाइल हमले हुए।
 - रूसी समर्थन के साथ सीरियाई सरकारी बलों ने पूर्वी सीरिया के अधिकांश हिस्से पर फिर से नियंत्रण कर लिया, और ISIS को पीछे धकेल दिया गया।
- 2018: इदलिब और कुर्दिश तनाव**
 - इदलिब में विपक्ष के अंतिम प्रमुख गढ़ के विरुद्ध बड़े पैमाने पर सरकारी आक्रमण शुरू हुआ।
 - उत्तरी सीरिया में अमेरिकी और तुर्की सेनाएं कुर्द वाईपीजी लड़ाकों से भिड़ गईं, जिससे नाटो सहयोगियों के बीच तनाव बढ़ गया।
- 2019: ISIS की हार और अमेरिका की वापसी**
- ISIS ने सीरिया में अपना क्षेत्रीय खलीफा खो दिया, अमेरिका ने उत्तरी सीरिया से अमेरिकी सैनिकों की वापसी का आदेश दिया।

● 2020-2021: जारी संघर्ष

- रूस और ईरान के समर्थन से असद शासन ने सीरिया के अधिकांश हिस्सों पर नियंत्रण पा लिया, लेकिन देश के कुछ हिस्से विद्रोहियों के नियंत्रण में हैं।
- अमेरिका ISIS के बचे हुए लोगों का मुकाबला करने और कुर्द बलों का समर्थन करने के लिए उत्तरपूर्वी सीरिया में सैन्य उपस्थिति बनाए रखता है।

● 2022-2023: निरंतर संघर्ष

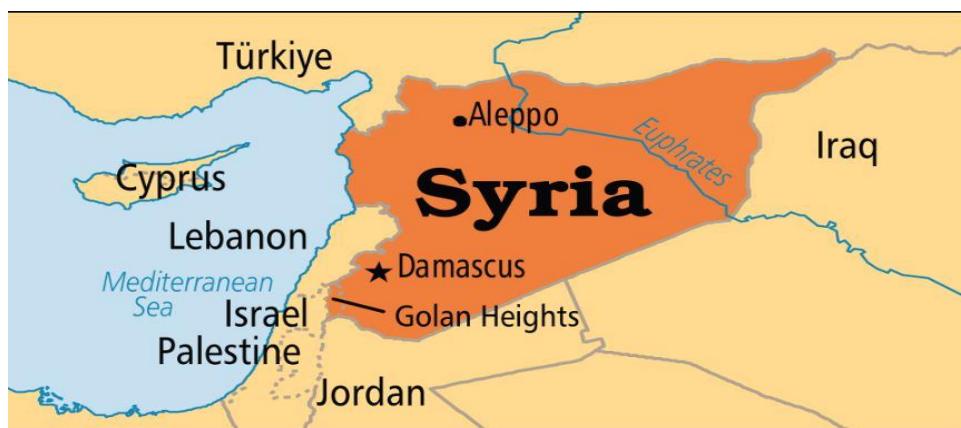
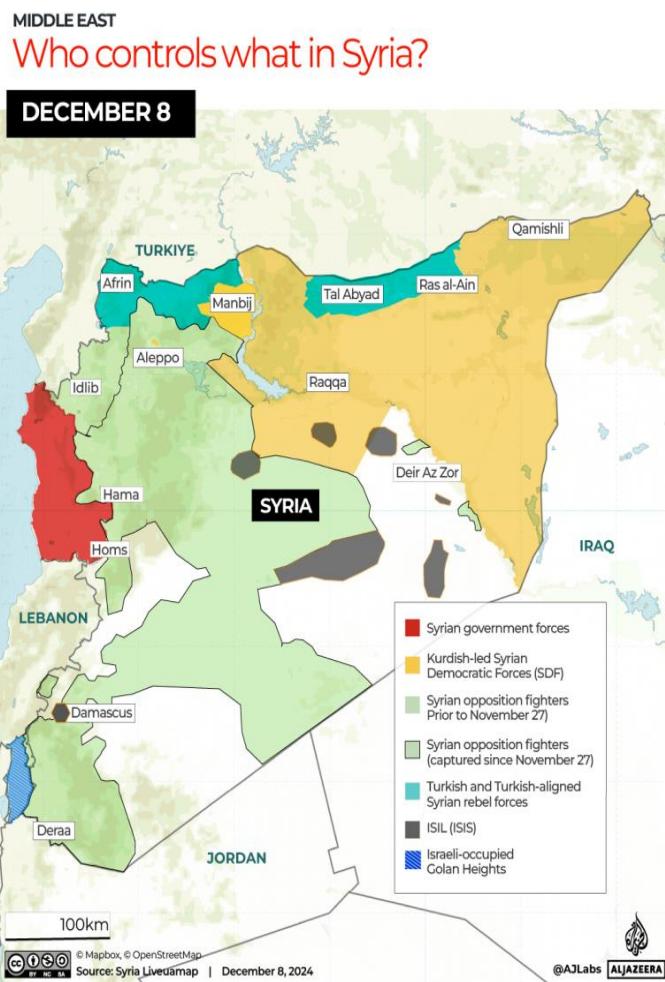
- इज़राइल पर हमास के हमले से लेबनान में इज़राइल एवं हिज़बुल्लाह के बीच युद्ध शुरू हो गई, जिससे अंततः सीरिया में समूह की उपस्थिति कम हो गई और असद को घातक रूप से कमज़ोर कर दिया गया।

● 2024: विद्रोहियों ने अलेप्पो पर एक नया हमला किया।

- असद के सहयोगियों का ध्यान अन्यत्र केंद्रित होने के कारण उसकी सेना शीघ्र ही ध्वस्त हो गई और विद्रोहियों ने अधिकांश प्रमुख शहरों पर नियंत्रण कर लिया, जिससे असद सत्ता से बाहर हो गया।

सीरिया की भौगोलिक स्थिति

- सीरिया मध्य पूर्व में, एशियाई महाद्वीप के पश्चिमी भाग में स्थित है।
- यह उत्तर में तुर्की, पूर्व में ईराक, दक्षिण में जॉर्डन, दक्षिण-पश्चिम में इज़राइल और लेबनान तथा पश्चिम में भूमध्य सागर के साथ सीमा साझा करता है।
- सीरिया एक रणनीतिक स्थान रखता है, जो लेवेंट क्षेत्र को शेष अरब दुनिया से जोड़ता है।



- लेवेंट एक ऐतिहासिक और भौगोलिक शब्द है जो पूर्वी भूमध्य सागर के एक क्षेत्र को संदर्भित करता है।
 - इसमें आधुनिक समय के देश सीरिया, लेबनान, जॉर्डन, इज़राइल, फ़िलिस्तीन और तुर्की के कुछ हिस्से शामिल हैं।
 - लेवेंट पूरे इतिहास में सभ्यताओं का चौराहा रहा है, जो अपने सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक महत्व के लिए जाना जाता है।

भारत और सीरिया

- मैत्रीपूर्ण संबंध:** राष्ट्रपति बशर अल-असद के नेतृत्व में सीरिया ने भारत के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखे।
 - भारत ने असद शासन के साथ संबंध बनाए रखे, विशेषकर यूएई, बहरीन और सऊदी अरब जैसे प्रमुख क्षेत्रीय खिलाड़ियों द्वारा सीरिया के साथ संबंध फिर से स्थापित करने के बाद।
- आंतरिक मामलों में समर्थन:**
 - सीरिया, एक मुस्लिम बहुल देश, कश्मीर मुद्दे पर भारत के दृष्टिकोण का लगातार समर्थन करता रहा है।
 - इज़राइल ने 1967 के छह दिवसीय युद्ध में सीरिया से लेवेंट क्षेत्र में चट्टानी गोलान हाइट्स पर नियंत्रण कर लिया था।
 - भारत ने गोलान हाइट्स पर सीरिया के वैध अधिकार का लगातार समर्थन किया है।
 - संयुक्त राष्ट्र में, भारत ने सीरिया के विरुद्ध प्रतिबंधों का समर्थन करने से भी मना कर दिया है।
- भविष्य का दृष्टिकोण:** भारत के लिए, सीरिया और मध्य पूर्व के अन्य प्रमुख खिलाड़ियों के साथ स्थिर संबंध बनाए रखना इन मुस्लिम बहुल देशों के अंदर पाकिस्तान के आख्यानों का सामना करने में महत्वपूर्ण रहा है।
- सीरिया के साथ भारत का भविष्य का जुड़ाव संभवतः** नई गतिशीलता द्वारा आकार ले सकता है।

शासन परिवर्तन का महत्व

- भू-राजनीतिक प्रभाव:** नेतृत्व में परिवर्तन से सीरिया के गठबंधन बदल सकते हैं, विशेषकर रूस, ईरान और तुर्की के साथ, जिन्होंने संघर्ष में प्रमुख भूमिका निभाई है, जिससे व्यापक मध्य पूर्व गतिशीलता प्रभावित हुई है।
- सीरियाई संप्रभुता पर प्रभाव:** असद शासन ने सैन्य बल और विदेशी समर्थन के मिश्रण के माध्यम से अपनी शक्ति बनाए रखी है।
 - नेतृत्व में परिवर्तन से विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक नीतियाँ सामने आ सकती हैं।
- मानवीय परिणाम:** चल रहे संघर्ष ने बड़े पैमाने पर पीड़ा, विस्थापन और जानमाल की हानि की है।
 - परिवर्तन का तात्पर्य मानवाधिकार नीतियों और देश के पुनर्निर्माण के प्रयासों में बदलाव हो सकता है।
- अंतर्राष्ट्रीय संबंध:** युद्ध के परिणाम और नेतृत्व में कोई भी परिवर्तन क्षेत्र में वैश्विक शक्तियों की रणनीतियों को प्रभावित करता है, जो अमेरिका, रूसी, ईरानी एवं यूरोपीय नीतियों को प्रभावित करता है।

मध्य पूर्व पर प्रभाव

- ईरान:** ईरान असद का कट्टर समर्थक रहा है। सीरिया एक महत्वपूर्ण भौगोलिक कड़ी थी जिसका प्रयोग ईरान लेबनान में हिजबुल्लाह को हथियार और अन्य आपूर्ति पहुंचाने के लिए करता था।
 - हिजबुल्लाह, जिसने इजरायल के साथ युद्ध में महत्वपूर्ण नुकसान उठाया है, हथियारों की आपूर्ति के बिना कमज़ोर हो जाएगा।

- इजराइल:** इजरायल ने असद शासन के पतन की सराहना की है, लेकिन इसके लिए चुनौतियां अभी भी बनी हुई हैं क्योंकि नया शासन अल-कायदा का एक अंग है और इजरायल में एक नामित आतंकवादी संगठन है।
- तुर्की:** 2011 से, तुर्की विपक्षी विद्रोहियों का एक प्रमुख समर्थक रहा है। तुर्की ने अपने सीरियाई प्रॉक्सी का उपयोग कुर्द बलों को पीछे धकेलने के लिए किया, जो इसकी दक्षिणी सीमा पर जोखिम उत्पन्न करते हैं।
 - सीरिया में राजनीतिक विकास तुर्की के लिए अनिश्चितताओं के साथ आता है क्योंकि असद की वापसी के बाद उत्पन्न शून्य का संभावित रूप से तुर्की विरोधी कुर्द बलों द्वारा उपयोग किया जा सकता है।

Source: TH

आनुवंशिक रूप से संशोधित मलेरिया परजीवियों का उपयोग करके मलेरिया की रोकथाम

सन्दर्भ

- एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण अपनाते हुए, वैज्ञानिकों ने अपना ध्यान मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों के आनुवंशिक संशोधन से हटाकर मलेरिया फैलाने वाले परजीवियों पर केंद्रित कर लिया है।

परिचय

- परंपरागत रूप से, मलेरिया को नियंत्रित करने के प्रयासों में मच्छरों के वाहकों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- कुछ प्रमुख दृष्टिकोणों में शामिल हैं:
 - विकिरण-निष्फल मच्छर:** निष्फल नर मच्छरों को छोड़ने से निषेचन रुक जाता है, जिससे मच्छरों की जनसंख्या कम हो जाती है।
 - मच्छरों में परजीवी वृद्धि को धीमा करना:** आनुवंशिक इंजीनियरिंग मच्छरों की आंत में प्लास्मोडियम परजीवियों की वृद्धि को धीमा कर देती है, जिससे मनुष्यों में संक्रमण रुक जाता है।
 - आनुवंशिक रूप से संशोधित मच्छर:** मच्छरों को पनपने और संभोग के माध्यम से प्लास्मोडियम परजीवियों के लिए आनुवंशिक प्रतिरोध फैलाने के लिए इंजीनियर किया जाता है, जिससे संक्रमण दर कम हो जाती है।

मलेरिया परजीवी का जीवन चक्र

- मलेरिया फैलाने वाले परजीवी मच्छर के काटने के बाद सबसे पहले मनुष्य के लीवर में प्रवेश करते हैं।
- संक्रमण और लक्षण तभी दिखाई देते हैं जब परजीवी लीवर से रक्तप्रवाह में चले जाते हैं।

संशोधन कैसे कार्य करता है?

- प्रतिरक्षा प्राइमिंग:** आनुवंशिक रूप से संशोधित परजीवी एक वैक्सीन की तरह कार्य करते हैं, जो भविष्य में संक्रमण से व्यक्तियों को बचाने के लिए यकृत चरण के दौरान प्रतिरक्षा प्रणाली को प्राइम करते हैं।
- नियंत्रित वृद्धि गिरफ्तारी:** परजीवी की वृद्धि छठे दिन (देर से गिरफ्तार परजीवी) पर रोक दी जाती है, जिससे परजीवी को मारने से पहले प्रतिरक्षा प्रणाली को सक्रिय होने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है।
- प्रारंभिक बनाम देर से गिरफ्तारी:** प्रारंभिक गिरफ्तारी (पहले दिन) प्रतिरक्षा जोखिम को सीमित करती है, प्रभावशीलता को कम करती है, जबकि देर से गिरफ्तारी बेहतर सुरक्षा के लिए प्रतिरक्षा प्राइमिंग को बढ़ाती है।

विकास का महत्व

- वैक्सीन जैसा प्रभाव:** आनुवंशिक रूप से संशोधित परजीवी एक प्राकृतिक प्रतिरक्षा बूस्टर के रूप में कार्य करते हैं, जो वैक्सीन के समान सुरक्षा प्रदान करते हैं।
- लक्षित दृष्टिकोण:** केवल मच्छरों पर ध्यान केंद्रित करने वाले तरीकों के विपरीत, परजीवियों को संशोधित करने से प्लास्मोडियम जीवन चक्र सीधे बाधित होता है, जिससे बीमारी का जोखिम कम हो जाता है।
- प्रतिरोध पर नियंत्रण पाना:** मच्छरों में कीटनाशक प्रतिरोध और परजीवियों में दवा प्रतिरोध के बढ़ने के साथ, यह दृष्टिकोण एक आशाजनक वैकल्पिक रणनीति प्रदान करता है।
- बढ़ी हुई प्रभावकारिता:** परजीवियों को देर से पकड़ने से प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने में सहायता मिलती है, जिससे मलेरिया की रोकथाम की प्रभावशीलता बढ़ जाती है।

चुनौतियाँ और चिंताएँ

- जैव सुरक्षा मुद्दे:** आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों (GMOs) के विमोचन और उपयोग में जैव सुरक्षा जोखिम शामिल हैं, जिनका समाधान किया जाना चाहिए।
- नैतिक विचार:** परजीवियों का आनुवंशिक संशोधन प्राकृतिक जैविक प्रणालियों में परिवर्तन के बारे में नैतिक प्रश्न उठाता है।

मलेरिया क्या है?

- मलेरिया एक जानलेवा बीमारी है** जो कुछ प्रकार के मच्छरों द्वारा मनुष्यों में फैलती है। यह ज़्यादातर उष्णकटिबंधीय देशों में पाया जाता है।
- संचरण:** यह प्लास्मोडियम प्रोटोजोआ के कारण होता है। प्लास्मोडियम परजीवी संक्रमित मादा एनोफेलीज़ मच्छरों के काटने से फैलता है। रक्त आधान और दूषित सुई भी मलेरिया फैला सकती है।
- परजीवियों के प्रकार:** प्लास्मोडियम(Plasmodium) परजीवी की 5 प्रजातियाँ हैं जो मनुष्यों में मलेरिया का कारण बनती हैं और इनमें से 2 प्रजातियाँ - पी. फाल्सीपेरम(P. falciparum) और पी. विवैक्स(P. vivax) - सबसे बड़ा खतरा हैं। अन्य मलेरिया प्रजातियाँ जो मनुष्यों को संक्रमित कर सकती हैं वे हैं पी. मलेरिया(P. malariae), पी. ओवेल(P. ovale) और पी. नोलेसी(P. knowlesi)।
 - पी. फाल्सीपेरम(P. falciparum) सबसे घातक मलेरिया परजीवी है और अफ्रीकी महाद्वीप पर सबसे ज़्यादा प्रचलित है। पी. विवैक्स(P. vivax) उप-सहारा अफ्रीका के बाहर अधिकांशतः देशों में मलेरिया का प्रमुख परजीवी है।
- लक्षण:** बुखार और फ्लू जैसी बीमारी, जिसमें ठंड लगना, सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द एवं थकान शामिल है।

Source: TH

भारत में FDI प्रवाह 1 ट्रिलियन डॉलर के पार

सन्दर्भ

- भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) प्रवाह अप्रैल 2000-सितंबर 2024 की अवधि में 1 ट्रिलियन डॉलर के आंकड़े को पार कर गया है।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) क्या है ?

- यह विदेशी संस्थाओं (व्यक्तियों या कंपनियों) द्वारा किसी अन्य देश के व्यावसायिक हितों में किए गए निवेश को संदर्भित करता है, जो सामान्यतः उद्यमों के स्वामित्व या नियंत्रण के रूप में होता है।
- वर्तमान में, लॉटरी, जुआ एवं सट्टेबाजी, चिट फंड, निधि कंपनी, रियल एस्टेट व्यवसाय और तंबाकू का उपयोग करके सिंगार, चुरूट, सिंगारिलोस तथा सिंगरेट के निर्माण में FDI प्रतिबंधित है।

भारत में FDI के लिए मार्ग

- **स्वचालित मार्ग:** किसी पूर्व स्वीकृति की आवश्यकता नहीं है।
 - निवेशकों को निवेश करने के बाद भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) को सूचित करना होगा।
 - विनिर्माण और सॉफ्टवेयर जैसे अधिकांश क्षेत्र इस मार्ग के अंतर्गत आते हैं।
- **सरकारी स्वीकृति मार्ग:** संबंधित मंत्रालय या विभाग से पूर्व स्वीकृति की आवश्यकता होती है।
 - दूरसंचार, मीडिया, फार्मास्यूटिकल्स और बीमा जैसे क्षेत्र इस मार्ग के अंतर्गत आते हैं।

FDI प्रवाह में रुझान

- FDI की संचयी राशि में इंडिया, पुनर्निवेशित आय और अन्य पूँजी शामिल है।
- 2014 से भारत ने संचयी FDI प्रवाह में \$667.4 बिलियन आकर्षित किया है, जो पिछले दशक (2004-2014) की तुलना में 119% की वृद्धि दर्शाता है।
- स्रोत: 25% FDI मॉरीशस मार्ग से आया।
 - इसके बाद सिंगापुर (24%), अमेरिका (10%), नीदरलैंड (7%), जापान (6%), यू.के. (5%), यूरई (3%) और केमैन आइलैंड्स, जर्मनी एवं साइप्रस में 2-2% FDI आया।
- अधिकतम प्रवाह को आकर्षित करने वाले प्रमुख क्षेत्रों में सेवा क्षेत्र, कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर, दूरसंचार, व्यापार, निर्माण विकास, ऑटोमोबाइल, रसायन एवं फार्मास्यूटिकल्स शामिल हैं।

FDI का महत्व

- **बुनियादी ढाँचे का विकास:** भारत को बुनियादी ढाँचे में सुधार और विकास को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता है।
- **भुगतान संतुलन (BoP):** FDI विदेशी पूँजी लाकर चालू खाता घाटे को समाप्त करने में सहायता करता है।
- **मुद्रा स्थिरता:** स्वस्थ प्रवाह वैश्विक बाजारों में रूपये के मूल्य का समर्थन करता है।
- **प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और रोजगार:** FDI आधुनिक प्रौद्योगिकी लाता है और विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार सृजित करता है।

चुनौतियां

- **भू-राजनीतिक तनाव:** चल रहे संघर्ष एवं व्यापार युद्ध वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं को बाधित करते हैं और निवेशकों की भावनाओं को प्रभावित करते हैं।
- **नियामक मुद्दे:** जटिल अनुमोदन प्रक्रियाएँ और अलग-अलग क्षेत्रीय सीमाएँ निवेशकों को हतोत्साहित कर सकती हैं।
- **वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता:** वैश्विक स्तर पर मंदी के जोखिम और उच्च मुद्रास्फीति पूँजी प्रवाह को अस्थिर बनाए रख सकती है।
- **बुनियादी ढाँचे की बाधाएँ:** परियोजना निष्पादन में देरी और अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

सरकार द्वारा उठाए गए कदम

- उदारीकृत FDI नीति:** रक्षा (74%), बीमा (74%), और एकल-ब्रांड खुदरा (100%) में FDI सीमा बढ़ाई गई।
- उत्पादन-लिंकेंग प्रोत्साहन (PLI) योजनाएँ:** विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मा, कपड़ा और ऑटोमोबाइल जैसे क्षेत्रों में शुरू की गई।
- बुनियादी ढांचा विकास:** गति शक्ति, भारतमाला और सागरमाला जैसे कार्यक्रम कनेक्टिविटी में सुधार पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- डिजिटल इकोसिस्टम:** डिजिटल भुगतान, ई-गवर्नेंस और प्रौद्योगिकी-संचालित सुधारों को बढ़ावा देना।

आगे की राह

- इंफ्रास्ट्रक्चर कैपेक्स को प्राथमिकता दें:** समय पर परियोजना निष्पादन सुनिश्चित करें और सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) को आकर्षित करें।
- कार्यबल कौशल:** उद्योग की मांगों को पूरा करने के लिए कार्यबल को बेहतर बनाने के लिए निजी क्षेत्र के साथ सहयोग करें।
- अनुसंधान एवं विकास और नवाचार को मजबूत करें:** प्रमुख क्षेत्रों में उत्पादकता और नवाचार को बढ़ाने के लिए अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा दें।

Source: TH

रेलवे (संशोधन) विधेयक 2024

सन्दर्भ

- केंद्रीय रेल मंत्री ने लोकसभा में रेलवे (संशोधन) विधेयक, 2024 पेश किया, जिसमें भारतीय रेलवे की स्वायत्तता और दक्षता बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण सुधारों का प्रस्ताव किया गया है।

विधेयक के मुख्य उद्देश्य

- रेलवे बोर्ड को वैधानिक समर्थन:** रेलवे बोर्ड को कानूनी स्वीकृति प्रदान करने के लिए रेलवे अधिनियम, 1989 में संशोधन किया गया है, जो अपनी स्थापना के बाद से ही वैधानिक समर्थन के बिना कार्य कर रहा है।
- शक्तियों का विकेंद्रीकरण:** रेलवे क्षेत्रों को बजट, बुनियादी ढांचे और भर्ती को स्वतंत्र रूप से प्रबंधित करने के लिए अधिक स्वायत्तता प्रदान करता है।
- स्वतंत्र नियामक की स्थापना:** टैरिफ को विनियमित करने, सुरक्षा सुनिश्चित करने और निजी क्षेत्र की भागीदारी को सुविधाजनक बनाने के लिए एक स्वायत्त निकाय की शुरुआत की गई है।
- कानूनी ढांचे का सरलीकरण:** भारतीय रेलवे बोर्ड अधिनियम, 1905 को रेलवे अधिनियम, 1989 के साथ मिला दिया गया है।

प्रस्तावित सुधार और संरचनात्मक परिवर्तन

- स्वतंत्र विनियामक:** टैरिफ विनियमन, बुनियादी ढांचे तक पहुंच और सेवा मानकों जैसे मुद्दों को संबोधित करता है।
 - रेलवे पुनर्गठन पर 2015 समिति द्वारा शुरू में की गई सिफारिश।
- रेलवे जोन को स्वायत्तता:** परिचालन और वित्तीय निर्णय लेने का विकेंद्रीकरण। श्रीधरन समिति (2014) द्वारा समर्पित।

- **रेलवे बोर्ड की नियुक्ति और संरचना:** बोर्ड की संरचना, योग्यता एवं सदस्यों और अध्यक्ष के लिए नियुक्ति प्रक्रियाओं को परिभाषित करने के लिए सरकार को अधिकार देता है।
- **बुनियादी ढांचे का उन्नयन:** नई धारा 24A तेजी से सुपरफास्ट ट्रेन संचालन और बुनियादी ढांचे के उन्नयन को सक्षम बनाती है।
 - उदाहरण के लिए, सीवान-थावे-कप्तानगंज-गोरखपुर मार्ग के माध्यम से अरुणाचल एक्सप्रेस का विस्तार करने से बिहार को लाभ होने की उम्मीद है, जिसमें उन्नयन के लिए 300 करोड़ रुपये और आवर्ती व्यय में सालाना 250 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत आएगी।

संभावित लाभ

- **बेहतर शासन:** कानूनी ढांचे को सुव्यवस्थित करने और रेलवे बोर्ड की भूमिका को स्पष्ट करने से बेहतर शासन एवं जवाबदेही हो सकती है।
- **बढ़ी हुई दक्षता:** विकेंद्रीकरण और क्षेत्रों के लिए स्वायत्तता के परिणामस्वरूप परियोजनाओं का तेजी से कार्यान्वयन, संसाधनों का बेहतर उपयोग एवं बेहतर सेवा वितरण हो सकता है।
- **बढ़ा हुआ निवेश:** एक स्वतंत्र नियामक निजी खिलाड़ियों के लिए अधिक समान खेल का मैदान बना सकता है, जिससे रेलवे के बुनियादी ढांचे में निवेश आकर्षित हो सकता है।
- **क्षेत्रीय विकास:** अरुणाचल एक्सप्रेस का विस्तार करने जैसे प्रावधान विशिष्ट क्षेत्रों में लक्षित बुनियादी ढांचे के विकास की क्षमता को प्रदर्शित करते हैं।

चिंताएं और आगे की राह

- **निजीकरण की आशंका:** संभावित निजीकरण के बारे में विपक्ष की चिंता पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। जबकि निजी क्षेत्र की भागीदारी निवेश और विशेषज्ञता ला सकती है, सार्वजनिक हित की रक्षा एवं सभी के लिए पहुँच महत्वपूर्ण बनी हुई है।
- **स्वायत्तता बनाम नियंत्रण:** प्रभावी निगरानी और जवाबदेही के साथ क्षेत्रों के लिए बढ़ी हुई स्वायत्तता को संतुलित करना आवश्यक होगा। बोर्ड की नियुक्तियों में सरकार की भूमिका पारदर्शी होनी चाहिए और बोर्ड की स्वतंत्रता सुनिश्चित करनी चाहिए।
- **यात्री कल्याण:** यात्री रियायतों के बारे में चिंताओं को दूर करना और समाज के कमजोर वर्गों के लिए किफायती किराया सुनिश्चित करना रेलवे की सामाजिक जिम्मेदारी को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

Source: FE

डी-डॉलरीकरण(De-dollarization) और डॉलर पर निर्भरता के विरुद्ध हेजिंग

सन्दर्भ

- हाल ही में, भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने स्पष्ट किया है कि उसके हालिया उपाय, जैसे कि वोस्ट्रो खातों को अनुमति देना और घरेलू मुद्राओं में व्यापार को बढ़ावा देना, का उद्देश्य सीधे 'डी-डॉलरीकरण' के बजाय जोखिम में विविधता लाना है।

डी-डॉलरीकरण क्या है?

- यह मुख्य आरक्षित मुद्रा के रूप में अमेरिकी डॉलर (USD) पर विश्व की निर्भरता से दूर जाने की प्रक्रिया का वर्णन करता है।
- यह अन्य देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर अमेरिकी डॉलर के प्रभाव को कम करने को संदर्भित करता है।

ऐतिहासिक सन्दर्भ

- 1944 में ब्रेटन वुड्स समझौते के बाद से अमेरिकी डॉलर विश्व की प्राथमिक आरक्षित मुद्रा रहा है।
- इसने अमेरिका को महत्वपूर्ण आर्थिक लाभ प्रदान किए हैं, जिसमें कम उधार लागत और वैश्विक वित्तीय प्रणालियों पर अधिक प्रभाव शामिल है।
- हालांकि, डॉलर के प्रभुत्व ने आर्थिक दबाव के एक उपकरण के रूप में इसके संभावित दुरुपयोग के बारे में भी चिंताएँ उत्पन्न की हैं।

डी-डॉलरीकरण के कारण

- **आर्थिक प्रतिबंध:** रूस और ईरान जैसे देशों पर अमेरिकी प्रतिबंधों के लागू होने से उन्हें आर्थिक अलगाव से बचने के लिए अमेरिकी डॉलर के विकल्प खोजने पर मजबूर होना पड़ा है।
- **जोखिम का विविधीकरण:** राष्ट्र अमेरिकी मौद्रिक नीति में उतार-चढ़ाव से जुड़े जोखिमों को कम करने के लिए डॉलर पर अपनी निर्भरता कम करना चाहते हैं।
 - इससे उन्हें अपनी आर्थिक नीतियों पर अधिक नियंत्रण बनाए रखने में सहायता मिलती है।
- **डॉलर की मजबूती:** मजबूत अमेरिकी डॉलर के कारण अन्य देशों में आयात और ऋण चुकौती की लागत बढ़ सकती है, जिससे आर्थिक चुनौतियां बढ़ सकती हैं।
- **भू-राजनीतिक परिवर्तन:** चीन जैसी अन्य प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के उदय ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में उनकी मुद्राओं के उपयोग को बढ़ा दिया है।
 - उदाहरण के लिए, रूस और चीन अपने व्यापार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अपनी राष्ट्रीय मुद्राओं में करते हैं।
- **ब्रिक्स पहल:** ब्रिक्स देशों ने सदस्य देशों के बीच व्यापार को सुविधाजनक बनाने और डॉलर पर निर्भरता कम करने के लिए एक साझा मुद्रा की संभावना पर चर्चा की है।

डी-डॉलरीकरण क्यों नहीं?

- **भू-राजनीतिक विचार:** अमेरिकी डॉलर के लिए संभावित चुनौती के रूप में चीनी युआन का उदय डी-डॉलराइजेशन कथा को जटिल बनाता है।
 - भारत युआन पर अपनी निर्भरता बढ़ाने के बारे में सतर्क है, विशेषकर चीन के साथ भू-राजनीतिक तनाव को देखते हुए।
- **आर्थिक स्थिरता:** अमेरिकी डॉलर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए सबसे स्थिर और व्यापक रूप से स्वीकृत मुद्रा बनी हुई है।
 - डॉलर से अचानक दूर जाने से व्यापार और आर्थिक स्थिरता बाधित हो सकती है। RBI का दृष्टिकोण अर्थव्यवस्था को अस्थिर करने के बजाय जोखिम कम करना है।
- **ब्रिक्स गतिशीलता:** ब्रिक्स देशों के बीच भौगोलिक और आर्थिक विविधता महत्वपूर्ण चुनौतियां प्रस्तुत करती है।
 - यूरोज़ोन के विपरीत, ब्रिक्स देशों में आर्थिक एकीकरण या भौगोलिक निकटता का समान स्तर नहीं है।
- **अमेरिकी व्यापार संबंध:** हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति-चुनाव डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा ब्रिक्स देशों पर टैरिफ लगाने की धमकी, यदि वे डॉलर पर निर्भरता कम करते हैं, तो डी-डॉलराइजेशन के संभावित आर्थिक नतीजों को रेखांकित करता है।
 - एक संतुलित दृष्टिकोण बनाए रखने से भारत को ऐसे दंडात्मक उपायों से बचने में सहायता मिलती है।

भारत द्वारा राजनीतिक उपाय: डॉलर पर निर्भरता के विरुद्ध बचाव

- भारत की अर्थव्यवस्था वैश्विक वित्तीय प्रणाली में महत्वपूर्ण रूप से एकीकृत है, जहाँ अमेरिकी डॉलर का प्रभुत्व है।
 - यह जोखिम उत्पन्न करता है, विशेषकर डॉलर में उत्तर-चढ़ाव या भू-राजनीतिक तनाव की अवधि के दौरान।
- **सोने की खरीद:** RBI ने डॉलर-प्रधान प्रणाली से दूर जाने के लिए केंद्रीय बैंकों के बीच वैश्विक रुझानों के साथ सामंजस्य बिठाते हुए अपने सोने के भंडार में उल्लेखनीय वृद्धि की है।
- **स्थानीय मुद्रा व्यापार समझौते:** घरेलू मुद्राओं में लेनदेन को बढ़ावा देने और वोस्ट्रो खातों की अनुमति देने तथा स्थानीय मुद्रा व्यापार समझौतों में प्रवेश करके, RBI का लक्ष्य डॉलर पर निर्भरता को पूरी तरह से त्यागे बिना इससे जुड़े जोखिमों को कम करना है।

वोस्ट्रो और नोस्ट्रो खाते

- वोस्ट्रो और नोस्ट्रो दोनों ही तकनीकी रूप से एक ही प्रकार के खाते हैं, अंतर यह है कि खाता कौन और कहाँ खोलता है।
 - उदाहरण के लिए, यदि कोई भारतीय बैंक संयुक्त राज्य अमेरिका में खाता खोलना चाहता है, तो वह अमेरिका में किसी बैंक से संपर्क करेगा, जो नोस्ट्रो खाता खोलेगा और SBI के लिए डॉलर में भुगतान स्वीकार करेगा।
 - अमेरिका में भारतीय बैंक द्वारा खोला गया खाता भारतीय बैंक के लिए नोस्ट्रो खाता होगा, जबकि अमेरिकी बैंक के लिए, खाते को वोस्ट्रो खाता माना जाएगा।

Source: IE

भारत का भूस्थानिक बाजार 2025 तक 25,000 करोड़ रुपये तक पहुंच जाएगा

सन्दर्भ

- भारत भू-स्थानिक बाजार आउटलुक 2024 के अनुसार, भारत का भू-स्थानिक बाजार 16.5% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) से बढ़कर 2025 तक 25,000 करोड़ रुपये तक पहुंचने का अनुमान है।
 - 2019 से 2024 के बीच 126 कंपनियों में 1 बिलियन डॉलर का निवेश किया गया है।

भूस्थानिक प्रौद्योगिकी क्या है?

- भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों में स्थान-आधारित विश्लेषण, वास्तविक समय डेटा मैपिंग, हाइपरस्पेक्ट्रल इमेजिंग और ड्रोन-आधारित सर्वेक्षण शामिल हैं।
- ये उपकरण शहरी विकास, बुनियादी ढाँचा विकास, जलवायु अध्ययन (डीप ओशन मिशन) और कृषि आदि जैसे क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं।

भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों का महत्व

- **कृषि:** ड्रोन और उपग्रह इमेजरी द्वारा समर्थित सटीक कृषि फसल की उपज और संसाधन उपयोग में सुधार करती है।
- **आपदा प्रबंधन:** भू-स्थानिक डेटा बाढ़, सूखे और प्राकृतिक आपदाओं के लिए प्रारंभिक चेतावनी देने में सक्षम बनाता है, जिससे तैयारी में वृद्धि होती है।
- **शहरी विकास:** स्मार्ट शहर यातायात प्रबंधन, अपशिष्ट संग्रह और सार्वजनिक सेवाओं के लिए GIS का उपयोग करते हैं।

- पर्यावरण निगरानी:** वनों की कटाई, जल निकायों और प्रदूषण को ट्रैक करने में सहायता करता है, जिससे जलवायु कार्रवाई लक्ष्यों का समर्थन होता है।
- रक्षा और सुरक्षा:** सीमा निगरानी, मानचित्रण और रणनीतिक संचालन को सक्षम बनाता है।

सरकारी पहल

- पीएम गति शक्ति वास्तविक समय मानचित्रण का उपयोग करके बुनियादी ढांचे के विकास पर ध्यान केंद्रित करती है।
- राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति 2022 का उद्देश्य भू-स्थानिक डेटा का लोकतंत्रीकरण करना और सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ाना है।
- स्मार्ट सिटीज मिशन बेहतर शहरी नियोजन के लिए स्थान-आधारित विश्लेषण का उपयोग करता है।

प्रौद्योगिकी प्रगति

- हाइपरस्पेक्ट्रल इमेजिंग:** यह सैकड़ों प्रकाश तरंगदैर्घ्यों को कैप्चर करता है, जिससे निम्नलिखित अनुप्रयोगों को सक्षम किया जा सकता है;
 - फसल रोगों और मिट्टी के पोषक तत्वों के स्तर का शीघ्र पता लगाना।
 - जल प्रदूषण और मीथेन रिसाव की निगरानी करना।
- ड्रोन प्रौद्योगिकी:** आइडियाफोर्ज(ideaForge) जैसी कंपनियों ने वास्तविक समय, उच्च-रिज़ॉल्यूशन मैपिंग के माध्यम से डेटा संग्रह में क्रांति ला दी है, जो रक्षा और खनन जैसे क्षेत्रों के लिए सेंटीमीटर-स्तर की सटीकता प्रदान करती है।

चुनौतियां

- डेटा सुरक्षा:** भू-स्थानिक डेटा संवेदनशील है, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा है।
- जागरूकता की कमी:** भू-स्थानिक अनुप्रयोगों के बारे में छोटे उद्यमों में जागरूकता सीमित है।
- बुनियादी ढांचे की कमी:** भू-स्थानिक बुनियादी ढांचे तक व्यापक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता है।
- कौशल की कमी:** भू-स्थानिक डेटा विश्लेषण और ड्रोन प्रौद्योगिकियों में प्रशिक्षित पेशेवरों की आवश्यकता।

आगे की राह

- नीति कार्यान्वयन:** राष्ट्रीय भू-स्थानिक नीति 2022 को डेटा साझाकरण ढांचे और सार्वजनिक-निजी सहयोग को प्रोत्साहित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- क्षमता निर्माण:** शैक्षणिक कार्यक्रमों और अनुसंधान प्रोत्साहनों के माध्यम से भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों में पेशेवरों को प्रशिक्षित करें।
- स्टार्टअप को बढ़ावा देना:** घरेलू क्षमताओं को मजबूत करने के लिए स्काईरूट एयरोस्पेस और आइडियाफोर्ज जैसे स्वदेशी स्टार्टअप को बढ़ावा दें।
- वैश्विक भागीदारी:** भारत के भू-स्थानिक निर्यात का विस्तार करने के लिए वैश्विक अंतरिक्ष एजेंसियों और निजी फर्मों के साथ सहयोग करें।

Source: ET

भारत ने सहकारी क्षेत्र में विश्व की सबसे बड़ी अनाज भंडारण योजना का विस्तार किया

सन्दर्भ

- सहकारी क्षेत्र में महत्वाकांक्षी विश्व की सबसे बड़ी अनाज भंडारण योजना के पायलट चरण के तहत, भारत भर के 11 राज्यों में प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (PACS) में गोदामों का सफलतापूर्वक निर्माण किया गया है।
 - PACS गांव स्तर की सहकारी ऋण समितियाँ हैं जो राज्य स्तर पर राज्य सहकारी बैंकों (SCB) की अध्यक्षता में त्रि-स्तरीय सहकारी ऋण संरचना में अंतिम कड़ी के रूप में कार्य करती हैं।

योजना के मुख्य तत्व

- विकेंद्रीकरण:** अनाज भंडारण का ध्यान बड़े केंद्रीय गोदामों से हटाकर PACS स्तर पर छोटी, स्थानीय इकाइयों पर केंद्रित करना। इसके कई लाभ हैं:
- परिवहन लागत में कमी:** किसान अपने खेतों के पास ही अपनी उपज को स्टोर कर सकते हैं, जिससे परिवहन व्यय कम हो जाता है।
- कटाई के बाद होने वाले नुकसान में कमी:** कटाई के बाद तेजी से भंडारण से खराब होने और बर्बादी कम होती है।
- पहुंच में वृद्धि:** किसानों, विशेष रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में, भंडारण सुविधाओं तक आसान पहुंच है।
- PACS को सशक्त बनाना:** इस योजना का उद्देश्य ऋण वितरण से परे उनकी भूमिका में विविधता लाकर PACS को पुनर्जीवित करना है। इससे वे अधिक वित्तीय रूप से सतत बन सकते हैं और ग्रामीण विकास में उनके योगदान को बढ़ा सकते हैं।
- योजनाओं का अभिसरण:** यह योजना PACS को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए AIF और AMI जैसी वर्तमान सरकारी योजनाओं का चतुराई से उपयोग करती है, जिससे संसाधनों का कुशल उपयोग सुनिश्चित होता है।
- बहुआयामी अवसंरचना:** गोदामों के अतिरिक्त, यह योजना PACS को गोदामों, प्रसंस्करण इकाइयों और कस्टम हायरिंग केंद्रों जैसे अन्य कृषि अवसंरचना स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह एकीकृत दृष्टिकोण एक अधिक मजबूत और कुशल कृषि पारिस्थितिकी तंत्र बना सकता है।
- वित्तीय सहायता:** यह पहल विभिन्न सरकारी योजनाओं, जैसे कि कृषि अवसंरचना कोष (AIF) और कृषि विपणन अवसंरचना योजना (AMI) के माध्यम से सब्सिडी और ब्याज सहायता को एकीकृत करती है।
 - AIF योजना के तहत, PACS को 2 करोड़ रुपये तक के ऋण पर 3% ब्याज सहायता मिलती है, जिसकी पुनर्भुगतान अवधि सात वर्ष (2+5 वर्ष) होती है।
 - AMI योजना भंडारण इकाइयों के निर्माण के लिए PACS को 33.33% सब्सिडी प्रदान करती है।
- प्रमुख सहायक एजेंसियाँ:** राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (NCDC), राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (NABARD), नाबार्ड कंसल्टेंसी सर्विसेज (NABCONS)।

अनाज भंडारण बुनियादी ढांचे को बढ़ाने के लिए अन्य पहल

- ग्रामीण भंडारन योजना (ग्रामीण गोदाम योजना):** यह योजना ग्रामीण गोदामों के निर्माण या नवीनीकरण के लिए व्यक्तियों और संगठनों को सब्सिडी प्रदान करती है, जिससे खेत स्तर पर भंडारण क्षमता में वृद्धि होती है।
- केंद्रीय भंडारण निगम (CWC):** 1957 में स्थापित, CWC भारत भर में 400 से अधिक गोदामों का संचालन करता है, जो कृषि उपज सहित विभिन्न वस्तुओं के लिए वैज्ञानिक भंडारण और हैंडलिंग सेवाएं प्रदान करता है।

- राष्ट्रीय शीत-शृंखला विकास केंद्र (NCCD):** NCCD खराब होने वाली वस्तुओं के कटाई के बाद होने वाली हानि को कम करने के लिए कोल्ड-चैन अवसंरचना विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करता है।

Source: [DD News](#)

संक्षिप्त समाचार

अंगामी नागा जनजाति

सन्दर्भ

- पथर खींचने का समारोह अंगामी नागा जनजाति की एक पारंपरिक प्रथा है, जो एकता और सहयोग का प्रतीक है।

अंगामी नागा जनजाति के बारे में

- स्थान और जातीय पृष्ठभूमि:**
 - क्षेत्र:** प्रमुख नागा जनजातियाँ मुख्य रूप से नागालैंड के कोहिमा जिले में निवास करती हैं, जिनमें से कुछ मणिपुर में भी पहचानी जाती हैं।
 - प्रवास:** पूर्वज म्यांमार से नागालैंड चले आए।
 - जातीयता:** मंगोलॉयड जाति से संबंधित हैं।
- भाषा:**
 - टेनीडी(Tenyidie):** नागालैंड में अंगामी नागाओं के बीच सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा।
 - नागामीज़(Nagamese):** असमिया, बंगाली, हिंदी और नेपाली से ली गई एक पिजिन भाषा, जिसे सामान्य भाषा के रूप में उपयोग किया जाता है।
- संस्कृति और अर्थव्यवस्था:**
 - कृषि:** सीढ़ीनुमा गीली खेती के लिए जाना जाता है।
 - स्थानांतरित (झूम) खेती का अभ्यास करें।**
 - पशुपालन:** एक महत्वपूर्ण आजीविका गतिविधि।
- शिल्पकला:** बेंत और बांस की टोकरी बनाने के लिए प्रसिद्ध।
 - विशिष्ट उत्पाद:** खोफी, एक उपयोगी टोकरी।
- धर्म:** अधिकांश लोगों ने ईसाई धर्म अपना लिया है।
- समाज:** पितृसत्तात्मक और पितृवंशीय।
- त्यौहार:** सेक्रेनी सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार है, जिसे बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है।

Source: TH

विश्व ध्यान दिवस

समाचार में

- संयुक्त राष्ट्र महासभा के मसौदा प्रस्ताव के बाद जिसे भारत द्वारा सह-प्रायोजित किया गया और जिसे सर्वसम्मति से अपनाया गया, अब 21 दिसंबर को विश्व ध्यान दिवस के रूप में नामित किया गया है।
 - इसका उद्देश्य मानसिक, भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक आयामों सहित मानव कल्याण है।

भारत की भूमिका

- भारत ने कोर ग्रुप के अन्य देशों के साथ मिलकर इस प्रस्ताव का मार्गदर्शन किया और वसुधैव कुटुम्बकम ("पूरा विश्व एक परिवार है") के अपने दर्शन पर बल दिया।
- योग और ध्यान जैसी प्रथाओं के लिए भारत का वैश्विक समर्थन उसके सभ्यतागत मूल्यों के अनुरूप है।

21 दिसंबर का महत्व

- शीतकालीन संक्रांति:** उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे छोटा दिन और सबसे लंबी रात होती है।
- भारतीय संदर्भ:** मकर संक्रांति जैसे त्यौहारों से जुड़ा हुआ है, जो नवीनीकरण, समृद्धि और आशा का प्रतीक है। सूर्य सिद्धांत जैसे प्राचीन भारतीय ग्रंथों में कैलेंडर और मंदिर सरेखण में संक्रांति का उल्लेख है।
- अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) के ठीक छह महीने बाद आता है।

Source: TH

नारकोटिक ड्रग्स आयोग(CND)

सन्दर्भ

- भारत को नारकोटिक ड्रग्स आयोग (CND) के 68वें सत्र की अध्यक्षता के लिए चुना गया है।
 - यह पहली बार है कि भारत को इसकी अध्यक्षता के लिए नामित किया गया है।

परिचय

- इसकी स्थापना 1946 में संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद (ECOSOC) द्वारा की गई थी, यह नशीली दवाओं से संबंधित मामलों पर संयुक्त राष्ट्र का प्रमुख नीति-निर्माण निकाय है।
- इसका कार्य वैश्विक नशीली दवाओं के रुझानों की निगरानी करना, संतुलित नीतियों को तैयार करने में सदस्य राज्यों का समर्थन करना और प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय नशीली दवाओं के सम्मेलनों के कार्यान्वयन की देखरेख करना है।
- CND में 53 सदस्य देश हैं जिन्हें ECOSOC द्वारा चुना जाता है।
- इसकी अध्यक्षता एक ब्यूरो द्वारा की जाती है जिसमें प्रत्येक क्षेत्रीय समूह से एक सदस्य शामिल होता है।

Source: BS

तेल क्षेत्र संशोधन विधेयक, 2024

सन्दर्भ

- राज्यसभा ने तेल क्षेत्र (विनियमन और विकास) संशोधन विधेयक, 2024 पारित कर दिया।
 - यह विधेयक तेल क्षेत्र (विनियमन और विकास) अधिनियम, 1948 में संशोधन करता है।

प्रमुख विशेषताएं

- खनिज तेलों की परिभाषा का विस्तार:** विधेयक परिभाषा का विस्तार करते हुए इसमें निम्नलिखित को शामिल करता है: कोई भी प्राकृतिक रूप से पाया जाने वाला हाइड्रोकार्बन, कोल बेड मीथेन और शेल गैस/तेल।
 - यह स्पष्ट करता है कि खनिज तेलों में कोयला, लिंगाइट या हीलियम शामिल नहीं होंगे।
- पेट्रोलियम पट्टे की शुरूआत:** विधेयक खनन पट्टे की जगह पेट्रोलियम पट्टे को लाता है, जिसमें समान प्रकार की गतिविधियाँ शामिल हैं।

- निजी निवेश:** विधेयक में पेटोलियम और अन्य खनिज तेलों के घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए निजी खिलाड़ियों से निवेश की प्रोत्साहित करने के लिए कई प्रावधान शामिल हैं।
- अपराधों का गैर-अपराधीकरण:** विधेयक में प्रावधान है कि नियमों का उल्लंघन करने पर 25 लाख रुपये का जुर्माना लगाया जाएगा।
- दंडों का निर्धारण:** केंद्र सरकार दंडों के निर्धारण के लिए संयुक्त सचिव या उससे ऊपर के रैंक के अधिकारी की नियुक्ति करेगी।

आलोचनाएँ और चिंताएँ

- इस बात को लेकर चिंता व्यक्त की गई कि यह विधेयक राज्यों के अधिकारों को कैसे प्रभावित करेगा, यह देखते हुए कि भारतीय राज्यों के पास खनन गतिविधियों पर कर लगाने का अधिकार है।
- संविधान में राज्य सूची की प्रविष्टि 50 राज्यों को "खनिज अधिकारों" पर कर लगाने का अधिकार देती है। तेल क्षेत्र अधिनियम को फिर से तैयार करके, यह संसद को "तेल क्षेत्रों और खनिज तेल संसाधनों के विनियमन एवं विकास" के बारे में कानून बनाने की शक्ति देता है।

Source: IE

RBI का MuleHunter.AI ट्रूल

सन्दर्भ

- भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने MuleHunter.ai नामक AI/ML-आधारित मॉडल विकसित किया है।

परिचय

- उद्देश्य:** वित्तीय धोखाधड़ी के लिए प्रयोग किए जाने वाले म्यूल खातों(mule accounts) की समस्या से निपटना।
 - यह मशीन लर्निंग का उपयोग करके अवैध निधि प्रवाह को ट्रैक करके संदिग्ध खातों की शीघ्रता से और सटीक पहचान करता है।
 - यह बैंकों को धोखाधड़ी का अधिक प्रभावी और कुशलतापूर्वक पता लगाने में सहायता करेगा, जिससे भारत के वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा बढ़ेगी।
- म्यूल खाता (mule account) एक बैंक खाता है जिसका उपयोग अपराधी अवैध धन को लूटने के लिए करते हैं, जिसे प्रायः बिना सौचे-समझे व्यक्ति द्वारा आसानी से पैसे कमाने के बाद के लालच में या भागीदारी के लिए मजबूर करके खोला जाता है।
 - इन अत्यधिक परस्पर जुड़े खातों के माध्यम से धन के हस्तांतरण से धन का पता लगाना और उसे वापस पाना मुश्किल हो जाता है।
- वित्तीय धोखाधड़ी:** राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) के अनुसार, साइबर अपराध की शिकायतों में ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी की हिस्सेदारी 67.8% है।
 - म्यूल खाता के मामले बढ़ रहे हैं, और 2023 में वित्तीय संस्थानों के लिए कुल धोखाधड़ी के खतरों में से 53% मनी म्यूल के कारण थे।

Source: BS

